International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(I), January- March, 2025, pp. 39-42

मानव जीवन और कला

पुष्पा मीना*

प्रस्तावना

मनुष्य के जीवन में कला का विशेष महत्व है कला मनुष्य के जीवन में आनंद का भाव प्रदान करती है। कला हमारे जीवन को अर्थ देती है हमें अपनी दुनिया को समझने में मदद करती है सामान्यतः यह कहा जाता है जीवन जीने की कला ही हमारी संस्कृति हे यानि कला हमारी संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है क्योंकि यह हमें अपनी भावनाओं को गहरी समझ रखने की अनुमति देती है। यह हमारी आत्मा जागरूकता को बढाती है ओर हमें नए विचारों और अनुभव के लिए खुला रहने की भी अनुमति देती है कला यश–प्राप्ति, धन'–प्राप्ति, शक्ति प्राप्ति तथा समाज को सही राह दिखाने का माध्यम भी है कला अतिरिक्त सौंदर्य अनुभूति के रूप में प्रकट करने का एक उपकरण है तो कल निरंतर ऊंचा उठने के प्रगतिशील विचार की परिचायक है यानि नवीन विचारों आचार और मूल्यों का सृजन ही कला है।

कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएं उभारने, प्रवृतियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़नें, अभिरूचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है। मनोरंजन, सौंदर्य, प्रवाह, उल्लास न जाने कितनो तत्व से यह भरपूर है जिसमें मानवता को सम्मोहित करने की शक्ति है जीवन ऊर्जा का महासागर है जब अन्तश्वचेतना जागृत होती है तो ऊर्जा जीवन को कला के रूप में उभारती है कला जीवन को सत्यम शिवम सुंदरम से समन्वित करती है। यूरोपीय शास्त्रियों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशल का प्रयोग होता है। भारतीय साहित्य में कला शब्द का प्रयोग जीवन को सत्यम शिवम सुंदरम में समाहित करता है। कला उस क्षितिज की भांति है जिसका कोई छोर नही है इतनी विशाल, इतनी विस्तृत की अनेक विधाओं को अपने में समेटे है कला में ऐसी शक्ति होती है कि वह लोगों को संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर उसे ऐसे उच्च स्थान पर पहुंचा दे जहां मनुष्य केवल मनुष्य रह जाता हे कला व्यक्ति के मन में बनी स्वार्थ, परिवार, क्षेत्र, धर्म, भाषा एवं जाति आदि की सीमाएं मिटाकर विस्तृत और व्यापकता प्रदान करती है व्यक्ति के मन को उद्वेलित बनती है यह व्यक्ति को स्वयं से निकलकर वसुदेव कुटुम्बकम से जोड़ती है कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएं उभारने, प्रवृतियों को डालने, चिंतन को मोड़ने, अभिरूचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है इसमें मानवता को सम्मोहित करने की शक्ति है।

ईश्वरीय कला का अनुपम उदाहरण प्रकृति है क्योंकि अविश्लेषण रचनात्मक शक्ति ही कला है यद्यपि कला शब्द इतना व्यापक है कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएं है केवल एक विशेष पक्ष को छूकर रह जाती है कला का अर्थ अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है।

भारतीय परंपरा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते है जिसमें कौशल अपेक्षित हो! यूरोपीय शास्त्रों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है भारतीय साहित्य में कला शब्द का प्रयोग सबसे पहले नाट्यशास्त्र में

* सह आचार्य समाजशास्त्र, स्व. राजेश पायलट राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय, बांदीकुई, राजस्थान।

मिलता है इसके बाद वात्स्यायन ने अपने ग्रंथ कामसूत्र और शुक्र नीति में इसका वर्णन किया है अधिकांश ग्रंथों में 64 कलाओं का वर्णन मिलता है किंतु परंपरागत रूप में कला को सात भागों में बांटा गया है।

- स्थापत्य कला
- मूर्ति कला
- चित्रकला
- संगीत कला
- काव्य कला
- नृत्य कला
- रंगमंच

पश्चिमी समाज में कला को दो भागों में बांटा गया हैः–

- उपयोगी कलाएं
- ललित कलाएं

यूरोपीय साहित्य में प्रकृति से कला के कार्य को विभिन्न माना है यहां कला का अर्थ रचना/सजन से माना गया है अर्थात यह कृत्रिम है प्राकृतिक सृष्टि और कला दोनों भिन्न वस्तुएं है कला उसे कार्य में है जो मनुष्य करता है अर्थात कौशलपूर्ण मानवीय कार्य को ही कला संज्ञा दी जाती है अर्थात कला संस्कृति की वहिका है। रचनात्मक कला है रस अर्थात आनंद अथवा आस्वाद हमें स्थूल से चेतन सत्ता तक एक स्वरूप कर देता है मानवीय संबंधों और स्थितियों की विविध भाव लीलाओं और उनके माध्यम से चेतना को कला उजागर करती है।

कला का अर्थ एक निश्चित नहीं हो पाया है। विभिन्न भारतीय व पाश्चात्य विद्वानों ने इसकी भिन्न–भिन्न परिभाषाएं दी हैं। यथा–

रविन्द्रनाथ टैगोर 'जो सत हैं, जो सुन्दर हैं, वही कला हैं।'

मैथिलीशरण गुप्त – 'कला अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति हैं।

असित कुमार हाल्दार "कला मानव का सात्विक गुण है। एक सरल भाषा हैं. जो मानव जीवन के मूल्यों को सौन्दर्यात्मक एवं कल्याणकारी रूप में प्रस्तुत करती है।'

डॉ श्यामसुन्दर दास – "जिस अभिव्यंजनों में आंतरिक भावों का प्रकाशन और कल्पना का योग रहता हैं। वही कला हैं।

पाश्चात्य विद्वान कवि शैले 'कला कल्पना की अभिव्यक्ति हैं।

फ्रायड 'दमित वासनाओं का उभरा हुआ रूप ही कला हैं।

प्लेटो – कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति हैं।

अरस्तु दृ 'कला प्रकृति के सौन्दर्य अनुभवों का अनुकरण हैं।'

फागुए – 'कला भावों की उस अभिव्यक्ति को कहते हैं जो तीव्रता से मानव ह्रदय को स्पर्श कर सके।

टाल्सटॉय –"कला एक मानवीय चेष्टा हैं, जिसमें एक मनुष्य अपनी अनुभूतियों को स्वेच्छापूर्वक कुछ संकेतों के द्वारा दूसरों पर प्रकट करता है। तथा 'कला' की महता का ज्ञान भावों की सफल अभिव्यक्ति और कलाकारों के मन पर पड़े प्रभावों का सफलतापूर्वक संप्रेषण हैं।'

आर.जी. कलिंगवुड – कला एक व्यक्ति की रचनात्मक इच्छा की सुन्दर अभिव्यक्ति हैं। यह कल्पना की रचनात्मक प्रक्रिया द्वारा हमें प्राप्त होती हैं। हँगले – 'प्राकृतिक सौन्दर्य ईश्वरीय सौन्दर्य का आभास हैं। कला उसी आभास की पुनरावृति हैं।

हर्बट स्पेन्सर अतिरिक्त शक्ति का बहिप्रेपण ही कला हैं। [1]

कला मानवीय भावनाओं, कल्पनाओं की सहज सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति, संस्कृति की वाहिका तथा कल्याण की जननी हैं। योग–साधना है, मानव के रचनात्मक विचारों का एक दृश्य रूप हैं आदर्श प्रियता एवं सृजन शक्ति हैं जो भावपूर्ण व रसपूर्ण है। कला का अर्थ उसके प्रभाव में निहित हैं कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण हैं, जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है। 'कला' एक बहुमूल्य सम्पत्ति हैं। कला में भावना, कल्पना, सौन्दर्य अनुभूति इत्यादि को शीर्ष स्थान तक पहुंचाने का विशेष सामार्थ्य होता हैं। कला जीवन को उभारती हैं। सत्यम शिवम् सुन्दरम से समन्वित करती हैं. इसके द्वारा बुद्धि आत्मा का सत्य स्वरूप झलकता है। कला उस क्षितिज की भांति हैं जिसका कोई छोर नहीं है। हृदय की गहराईयों से निकली अनुभूति जब कला का रूप लेती हैं, तो मानों कलाकार का अन्तर्मन मूर्त रूप ले उठता है। कला ही आत्मिक शांति का माध्यम हैं. वह कठिन तपस्या हैं, साधना हैं। इसी के माध्यम से कलाकार सुनहरी और इन्द्रधनुषी आत्मा से स्वप्निल विचारों को साकार रूप देता हैं। कला में वह शान्ति हैं जिसमें मनुष्य को संकीर्ण विचारों को साकार रूप देता हैं। कला में वह शान्ति हैं जिसमें मनुष्य को संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठाकर ऐसे ऊंचे स्थान पर पहुंचा देती हैं जहां मनुष्य केवल मनुष्य रह जाता हैं। कला व्यक्ति के मन में बसी स्वार्थ, परिवार क्षेत्र, धर्म, भाषा और जाति की सीमाएं मिटाकर विस्तृत और व्यापकता प्रदान करती हैं। व्यक्ति के मन को उदात्त बनाती हैं। वह व्यक्ति को 'स्व' से निकालकर वसुधैव कुटुंबकम्' से जोड़ती है। कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएं उभारने प्रवृतियों को ढालने तथा चिंतन को मोडने की अभिरूचि की दिशा देने की अद्वैत क्षमता है। इसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति हैं।यह अपना जादू तत्काल दिखाती हैं और व्यक्ति को बदलने में लोहा पिघलकर भट्टी की तरह मनोवृति में भारी रूपान्तरण प्रस्तुत करती हैं। कला मिलन है आत्मा से परमात्मा का, अभिव्यक्ति हैं अनुभूति की कला विस्तृत विधाओं को अपने में समेटे है, तभी तो कवि भृतहरी द्वारा रचित नीतिक शतकम् में यह श्लोक कहा गया है

साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः ।।

कला के द्वारा कलाकार अपने अभिनव दृष्टिकोण के साथ अपनी नैसर्गिक प्रतिभा का सामंजस्य करके सांस्कृतिक मान्यताओं का मूल्यांकन करते हुए उनकी उपादेयता और महत्ता प्रतिपादित करता है अर्थात् कला संस्कृति की वाहिका, ज्ञापिका, विशिष्ट अंग और संस्कृति की भाषा हैं।

भारतीय कला

कला संस्कृति की वाहिका है भारतीय संस्कृति के विविध आयामों में व्याप्त मानवीय एवं रसात्मक तत्वों की कला रूपों में प्रकट हुए हैं कला का प्राण है रसात्मकता कला है। आनंद अथवा आस्वाद हमें स्भूल से चेतन सत्ता तक एक स्वरूप कर देता है मानवीय संबंधों और स्थितियों की विविध भाव लीलाओं और उसके माध्यम से चेतना को कला उजागर करती है भारतीय कला जहां एक और वैज्ञानिक और तकनीकी आधार रखती है वहीं दूसरी ओर भाव एवं रस को सदैव प्राण तत्व बनाकर रखती है।

भारतीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन है भारतीय कला का प्रारंभ चित्रकारी के रूप में प्रागैतिहासिक काल से माना जाता है जब मानव गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी किया करता था, भीम बटेक की गुफाओं में की गई चित्रकारी लगभग 5500 ईसा पूर्व से भी ज्यादा पुरानी है अजंता और एलोरा गुफाओं की चित्रकारी भारतीय चित्रकला का सर्वोत्तम उदाहरण है। भारतीय कला संस्कृति प्रधान रही है और वह धर्म को विशेष महत्व देती है वास्तव में धर्म ही भारतीय कला का प्राण है भारतीय कला धार्मिक एवं आध्यात्मिक भावनाओं से सदा अनु प्रणीत रही है किंतु भारतीय कलाकारों ने प्रत्येक युग में धार्मिक कृतियों के साथ–साथ लौकिक व धर्मनतर कृतियों का भी निर्मित किया है क्योंकि भारतीय सामाजिक जीवन में आध्यात्मिकता के साथ इहलोक को समान महत्व दिया गया है। अतः भारतीय कला को सामान्य जीवन की सच्ची दिग्दर्शिका भी कहा जा सकता है

भारतीय चित्रकारी में भारतीय संस्कृति की भांति ही प्राचीन काल से लेकर आज तक एक विशेष प्रकार के दर्शन होते है।

भारतीय की शाश्वत सत्य का प्रतीक है क्योंकि सत्यम शिवम सुंदरम की भावना से युक्त होने के कारण उस क्षितिज की भांति है जिसका कोई छोर नहीं इतनी विशाल इतनी विस्तृत की अनेक विधाओं को अपने में समेटे है इसमें मानवीयता को संबोधित करने की शक्ति है भारतीय संस्कृति एवं समाज का प्रतिबिंब देखना है तो मूर्ति कला एवं शिल्प कला को विशेष दर्जा देना होगा। भारतीय संस्कृति में लोक कलाओं जो तत्कालीन सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व भी करती है का विशेष स्थान है। लोक कलाओं का जन्म भावनाओं परंपराओं पर आधारित है क्योंकि यह जन सामान्य की अनुभूति की अभिव्यक्ति है। यह वर्तमान शास्त्रीय एवं व्यावसायिक कला की पृष्ठ भूमि भी है। भारतीय संस्कृति में धरती को श्रद्धा से अलंकृत किया गया है भारतीय संस्कृति के विभिन्न स्वरूपों में जैसे गुजरात में साथिया, राजस्थान में माडना, महाराष्ट्र में रंगोली, उत्तर प्रदेश में चौक पूरना, बिहार में अहपन बंगाल में अल्पना और गढवाल में आपना के नाम से प्रसिद्ध है यह कला धर्म अनु प्रणित भावों से प्रेषित होती है जिसमें श्रद्धा की रचना की जाती है विवाह और शुभ अवसरों में लोक कला का विशिष्ट स्थान है दरवाजे पर अलंकृत घरों का जिसमें जल व नारियल रखना बंदनवार बांधना आदि को आज आधुनिक युग में आदर भाव श्रद्धा और उपासना की दृष्टि से देखा जाता हे इस प्रकार कला व मानव जीवन में अंततः सबद्धता ने केवल एक विषय के रूप में प्रकट होती है बल्कि एक जीवन को एक समाज को और एक सामाजिक परिवेश को भी दिखती है। इस प्रकार कला व मानव जीवन में अंतः संबद्धता ने केवल एक विषय के रूप में प्रकट होती है बल्कि एक जीवन को एक समाज को और एक सामाजिक परिवेश को भी दिखती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एम0 एन0 श्री निवास :– आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन
2. भारतीय समाज व संस्कृति :– रवीन्द्रनाथ मुकर्जी
3. भारतीय सामाजिक संस्थाऐं :– रवीन्द्रनाथ मुकर्जी
4. जी0 आर0 मदान :– भारतीय सामाजिक समस्याऐं
5. सरला दुबे :– सामाजिक विघटन
6. अग्रवाल वासुदेवशरणः भारतीय कला, 2020

❖◆❖